५२७६
२१४

श्रीजानकीवल्लभो विजयते ।
हनुमते नमः । श्रीमते रामानन्दाय नमः ।
श्रीमद्सद्गुरु चरणकमलेभ्यो नमः ।

युगल नित्यलीला

अर्थात्

श्रीसीताराम भावना अष्टयाम सेवा

जिसकी

श्रीअयोध्या जानकीघाट निवासी श्रीसाकेत वासी
साधुशिरोमणि जगदोद्धारक जगद्गुरु अनन्तश्री

पं० श्रीरामवल्लभाशरणजी महाराज

के दिव्य उपदेश एवं आदेश के अनुसार
जयपुर निवासी सद्गुणराशि प्रिय शिष्य
कविप्रवर बहुरा श्रीगंगासहायजी

"श्रीप्रेमनिधिजी" ने

सुललित व्रजभाषा पद्य में रचना की ।

प्रकाशकः—
जानकीदास श्रीवैष्णव व्यवस्थापक—

श्रीप्रेमनिधि सद्ग्रन्थमाला

श्रीरामवल्लभा कुन्ज
श्रीजानकी घाट
श्रीअयोध्याजी ।

श्रीरामवल्लभाशरणाश्रम
(लड़ीवालों की बगीची)
घाट की सड़क, जयपुर ।

श्री गुरुपूर्णिमा] सं० २०१५ [प्रथम बार ५००

श्रीप्रेमनिधि सद्ग्रन्थमाला श्रीअयोध्याजी

पतित पावनी पुरी श्री अयोध्याजी में उपरोक्त ग्रंथमाला की स्थापना संतशिरोमणि श्रीवेदान्तीजी महाराज के द्वारा हुई है। अनन्त श्रीगुरुदेव के दिव्य गुण वैभव के प्रकाशक ग्रंथ श्रीसीताराम प्रेमप्रवाह, श्रीसद्गुरुचरितामृत आदि पूर्व में श्री प्रेम प्रकाश प्रेस जयपुर से जो प्रकाशित हुए थे वे एक तो अधूरे थे और फिर अब बहुत दिन से अप्राप्य भी हो गये हैं एवं श्री रामचरितमानस आदि ग्रंथों के भी उस शुद्ध पाठ के संस्करण अप्राप्य हो चुके हैं जिनका संशोधन हम सब आश्रित प्रेमियों के ऊपर असीम कृपा करके अनन्त श्री गुरुदेव ने निज कर कमल से करके जयपुर से प्रकाशित करवाया था, इन्हीं सब ग्रंथ रत्नों को एक माला के रूप में प्रकाशित करने के ध्येय से इसकी स्थापना की गई है।

कागज की महँगाई और प्रेस कर्मचारियों की वेतन बृद्धि पूर्वापेक्षा इस समय प्रायः पंचगुणी हो गई हैं। ग्रंथों की प्रतियां कम छापी जाने से भी मँहगी पड़ती हैं, अतः लागत मूल्य रखने पर भी पूर्वापेक्षा पुस्तकों के दाम बहुत अधिक लग जाते हैं ऐसी अवस्था में यह प्रयास है तो एक साहस ही परंतु कुछ प्रेमियों के अधिक आग्रह से आरंभ किया गया हैं। यदि आप सब प्रेमी वर्ग पुस्तकों को हाथों हाथ अपनाते जायँगे तो वे सब ग्रंथ जो कि आपके जीवनाधार ग्रंथ हैं और जिनके लिये आप चिरकाल से लालायित हैं इस माला में पिरोये जाकर आपको प्राप्त हो सकेंगे।

यह श्रीयुगल नित्यलीला माला का प्रथम रत्न है जिस का मूल्य ।) चार आना है। इस के पश्चात् अब श्री सीताराम प्रेम प्रवाह की एक एक तरंग आपकी सेवा में उपस्थित करने का प्रयास किया जा रहा है। माला चलाने में कम से कम २०००) की पूँजी तो आवश्यक ही है जिसमें अभी केवल ३००) प्राप्त हुए हैं।

महर्षि वाल्मीकि शोध संस्थान
4276
अयोध्या
श्री माणर मदास ... सेवा ट्रस्ट

❀ श्रीः ❀

श्रीमते रामानन्दाय नमः

श्रीमद् सद्गुरु चरणकमलेभ्यो नमः

❀ श्रीयुगल नित्यलीला ❀

❀ मङ्गलाचरण ❀

कवित्त—सीताराम प्रेम भक्ति पंथ के हैं अगवा जे
पोच शोच मोचन विलोचन विचार के।
हेतु दुहुँलोकके सुधारके हैं प्रेम नीके
नौका दृढ़ जगत अपार पारावार के।
धर्षक दुरति के सुजन चित्तकर्षक से
हर्षक प्रदर्शक हैं सार ओ असार के।
नवल-कमल-दल कोमल अमल भल
जयति चरण चारु सद्गुरु उदार के॥
वाणी गणनाथ जोरि हाथ नाऊँ माथ तुम्हैं
मन के करन चारु चरण गहत हों।
सीता सीतापति की ललित नित्य लीला ताहि
वर्णन चहत हों पै सकुचि रहत हों।
नाहीं लेश विद्याबल बुद्धि न विमल कलि-
मल तैं विकल बात साँची ये कहत हों।
दानी शिरमोर प्रेम प्रणत चकोर चन्द
कृपा दृगकोर तातैं रावरी चहत हों॥

दोहा—सिय रघुवर पदपद्म के, अलिनी अलि दिन दानि।
प्रणवौं गिरिजा शम्भु पद, द्रवहु दीनजन जानि॥

सवैया—मारुतनन्दन दुःखनिकन्दन आनँदकन्द तुम्है शिर नाऊँ।
छाँडि के छद्म महासुखसद्म सदा पदपद्म सप्रेम मनाऊँ।
रामचरित्र सुमानस के सुर मुख्य हो आप करो हियठाऊँ।
प्रेम सिया रघुनन्दन की नितकेलि भली तुम्हरे बल गाऊँ॥

षट्पद—तडित मेघ द्युति हरण वरण तनु सुन्दर सोहत।
भूषण द्युति जगमगत नयन चकचौंधत जोहत।
चन्द्र वदन छवि सदन कमल दल आयत लोचन।
बङ्क भ्रुकुटि मृदु हँसनि रसिकजन तपन विमोचन।
ब्रह्मादि देव ऋषि सिद्ध मुनि चहत रहहिं पद कमल रति।
कह प्रेम सुमति दायक जयति सिय रघुपति साकेत पति॥

श्री सियरामस्वरूप जानकीघाट निवासी।
रामवल्लभाशरण मोद मङ्गल की राशी।
मेरे हैं गुरुदेव सकल सन्तनके भूषण।
सिय रघुनन्दन भक्त सरोरुह कानन पूषण।
तिन कृपासरित अन्हवाय के करि निजहिय वाणी विमल।
प्रारम्भ करत हैं प्रेम यह युगल नित्यलीला नवल॥

दोहा—हरिजन सन्तन कविन के चरण करण वर क्षेम।
वन्दि नित्य लीला कहत, सिय सियवर की प्रेम॥

धाम वर्णन

सोरठा— राजत विरजा पार, दिव्यलोक परधाम वर।
ताके मध्य उदार, सोहत श्री साकेत पुर॥
रसिक जननके प्राण, श्री सीता अरु राम को।
वास विहारस्थान, नित्य दिव्य यह पुर अहहिं॥

चौ० पुर वाहिर चहुँओर सुहावन। राजत परम मनोहर कानन॥
एला ललित लवङ्ग रसाला। श्रीफल पूगी ताल तमाला॥
मोरसली कदली दाडिम भल। पनस पलाश जम्बु अरु पाटल॥

पारिजात आदिक तरु जेते। कानन मध्य विराजत तेते॥
फलभर नम्र सु पुष्पित सारे। सदा रहहिं अनुपम छवि धारे॥
विहरहिं दिव्य कुरङ्ग विहङ्ग। कूजहिं गूँजहिं कलरव भृङ्ग॥
जहँ तहँ लसहिं कुञ्ज तिहि माहीं। तिनकी छवि कहि आवत नाहीं॥
बापी रुचिर अनेक तडागा। सोहत लखि प्रकटत अनुरागा॥

दोहा—द्वादश अन्तर्वन अहहिं, परम रुचिर तिहि माहिं।
नन्दनादि वन कोटिशत, जिनहिं निरख सकुचाहिं॥

चौ० शृङ्गाराद्रि आदि गिरि चारी। सोहहिं चारिहुँ दिशन मझारी॥
मणिमय रुचिर शिखर तिन केरे। महाप्रकाश दिपत चहुँ फेरे॥
विमल सलिल सरयू सुख सारा। मोहत सोहत धनुषाकारा॥
पुरके तीन ओर सो बहहीं। निरखनहार महा सुख लहहीं॥
बँधे घाट मणिगण मय नाना। भ्राजत हेमरत्न सोपाना॥
विलुलित ललित तरङ्गन माहीं। झलमलात तिनकी परछाहीं॥
फूल रहे सरसिज बहुरङ्गा। झूमत रस लोभी बहु भृङ्गा॥
हंसादिक बहु चारि विहङ्गा। पैरत छवि पावहिं बहुरङ्गा॥

दोहा—बोलत तट पर कोकिला, चातक कीर चकोर।
गुण गावहिं शुक सारिका, नचहिं मयूरी मोर॥
जग पावनि सरयू सरित, शोभा परम अपार।
करत जहाँ प्रत्यक्ष जनु, परमानन्द विहार॥

उच्च कोट पुर चहुँदिशि सोहै। जिहिं निरखत मुनिजन मन मोहै॥
रुचिर कँगूरा मणिमय भ्राजहिं। तिनकी जगमग ज्योति विराजहिं॥
कोट निकट राजत परिखा भल। भरेउ सुधासम अति अगाध जल॥
फूले कमल अनेक भाँति वर। क्रीडहिं विविध प्रकार वारिचर॥
पुर की चारिहु दिशन मझारी। द्वार विराजहिं सुन्दर चारी॥
परकोटे विशाल तिन केरे। चित्रित तिनमें चित्र घनेरे॥
सोहत वज्र कपाट विशाला। खचित विविध मणि मुक्ता जाला॥

चार चार घटिका परमाना। पहरे देहिं वीर दरवाना ॥

षट्पद—चहुँ द्वारन पै बने उच्च आगार मनोहर।
तिन पर सोहत हैं नगारखाने सुन्दर तर।
तिन में घनध्वनि बजत सतत दुन्दुभी सुहाई।
समय समय शुभ सरस-राग रागहिं सहनाई।
झङ्कार झाँझ केरी उठत, दरसावनि लय ताल की।
प्रकटनि प्रहर्ष उत्साह की, धधकारैं करनाल की।

हरिगीति छंद—मणिमय रुचिर प्राकार बिच साकेतपुर अति सोहई
मोहत मनहिं जोहत रुचिर अति भूमि चिन्तामणि मई।
सुषमा अगार बजार परम विशाल आयत राजहीं।
नाना वरण नूतन पताका केतु राजी राजहीं॥
आराम सोहहिं ठाम ठाम ललाम वापी कूप हैं।
फूले कमल गूँजत मधुप कूजत पतत्रि अनूप हैं।
वर हाट बाट विराजहीं अति रम्य सब चौपर अहैं।
सब काल ते अति ही सगन्धित नीर लै छिरके रहैं॥
बैठे बणिक तिनकर विभव किहि भांति मुख कहि आवई।
जिन दास केरी सम्पदा लखि धनद हिय सकुचावई।
कहुँ हेम मय कहुँ लाल मय कहुँ नीलमणि मय भोन हैं।
वर्णन करै तिनकी रुचिरता विश्व अस कवि कोन हैं॥
अति उच्च शिखरन पर ध्वजा फहरहिं कलश भल जगमगैं।
सुन्दर कपाट गवाक्ष बातायन रुचिर चित वित ठयैं।
शुभ द्वार मंगल तरु अपार उदार तोरण भ्राजहीं।
मणि मोतियन की चारु बन्दनवार लखि उडु लाजहीं॥

दोहा—दिव्य नगर रमणीयता, कही कवन विधि जाय।
शेष शारदा शम्भु श्रुति, कथन करत सकुचाय॥
इन्द्रहि मनहूं तैं अगम, जो सुख भोग विलास।

सो सब भोगहिं प्रेमयुत, पुरजन सहित हुलास ॥
सब गुण मन्दिर सुन्दर सोहैं । निरखि जिनहिं रति मन्मथ मोहैं ॥
सब किशोरतनु सकल अनूपा । दम्पति प्रेम भक्ति के रूपा ॥
ठाम ठाम साजे समाज वर । गान करहिं गुण सिय रघुवर कर ॥
कहुँ सिय राम प्रेम मतवारे । घूमहिं निज तनु सुरति विसारे ॥
युगल नाम संकीर्तन करहीं । प्रेमवारि नयनन तैं झरहीं ॥
राम चरित्र कथा अति पावनि । जन मन भावनि सुख उपजावनि ॥
ठाम ठाम पर होहिं सप्रेमा । सुनहिं नारि नर नित्य सनेमा ॥
मन सब नगर निवासिन केरे । रहहिं राम सिय चरणन नेरे ॥

दोहा—सबके हिय श्री राम सिय प्रीति प्रतीति अमाय ।
तदपि प्रीति रुचि प्रेम नित, अधिक अधिक अधिकाय ॥
सन्तत दृग पुट छबि अमिय, पियहिं समेत हुलास ।
तदपि प्रेम अति मिटत नहिं, युगल दरस की प्यास ॥
नर रघुवर प्रतिबिम्ब से, तिय जनु सिय परिछाहिं ।
प्रेम अबुध तैं ते कहहु, केहि विधि वरणे जाहिं ॥

सोरठा—प्रभु इच्छा अनुसार, करहिं काज प्रभु लाडले ।
दम्पति रसिकाधार, सानुकूल तिन पर रहहिं ॥

चौ०मंत्रि सदन अति सोहहिं नीके । जिन ढिग इन्द्र सदनहू फीके ॥
निमिवंशी रघुवंशिन केरे । बने दिव्य आवास घनेरे ॥
तिनकी छवि कवि किहि विधि गावै । निरखतबुद्धि चकित होइ जावै ॥
दिव्यलोक भूषण पुर भूषण । सोहत राज भवन अति शोभन ॥
कोट चहूंदिशि मणि मय ताके । नाना वरण कँगूरा जाके ॥
मुख्य द्वार ताको छवि धामा । जाको सिंहपौरि अस नामा ॥
ताके कुलिशकपाट सुहावन । खचित रन्त बहु चित्त लुभावन ॥
सुभग द्वार आगे दुहुँ ओरा । सोहहिं द्वै केशरी किशोरा ॥

दोहा—पिंजर मणि मय रचित ते, नीलम धारि लसन्त ।

मुख अरु जीभ प्रवाल मय, बने वज्र नख दन्त ॥
सिंहपौरि भीतर बनी, रथ गयन्द हय शाल ।
रहत यान गज हयन तैं, ते संकुल सब काल ॥

चौ०सोहत दुन्दुभिसदन सुहावन । परमरम्य अति सुख उपजावन ॥
झाँझ भेरि नौबत सहनाई । बजत रहहिं तेहि माँझ सदाई ॥
आगे सोहत चौक विशाला । जाके दुहुँ दिशि मन्दिर माला ॥
सेनापति नृपदूत प्रधाना । तिनमें रहहिं वीर मतिमाना ॥
तिन आगे सेवक गण केरे । सोहहिं सुन्दर सदन घनेरे ॥
भूप मुकुटसेवा अधिकारी । तिन में रहहिं विमल मति धारी ॥
कविवर पंडितवृन्द प्रधाना । सब विद्या अरु कला निधाना ॥
तिनके बने निवास सदनबर । होत जिनहिं लखि चकित पुरन्दर ॥

दोहा—आगे सोहहिं रुचिरतर, मणिमय भवन विशाल ।
जहँ मंत्रिन युत नित करहिं, राजकाज भूपाल ॥

छन्द—आगे ताके विविध रत्न मय सप्तखंड मण्डित प्रासाद ।
सोहत जाहि निहारतही हिय भीतर उपजत अति आह्लाद ॥
रुचिर झरोखा विविध वर्ण के वातायन बहु ताके माहिं ।
भाँति भाँति के बने कटहरे निरखि जिनहिं विधि विष्णु सिहाहिं ॥
उच्च उच्च शिखरन पर राजहि अमित ध्वजा बहु रङ्ग रई ।
गङ्गा यमुना सरस्वतीजनु नभसरिता तैं मिलन गई ॥
कलश दिपत छतरिन के ऊपर होतजिनहिं लखि यह विश्वास ।
भानु चन्द्रमा होत प्रकाशित जनु इनहीतैं पाय प्रकाश ॥
चन्दनद्वार बडे मोतिन की द्वार झरोखन पै यहि भाँति ।
सोहत है जनु आय जेहि छवि मोहि रहिगई उडुगण पाँति ॥
वरणि सकों छवि वा मन्दिर की मोमें इती चतुरता नाहिं ।
चक्रवर्ति चूडामणि नरपति दशरथ निवसहिं जाके माहिं ॥
आगे अति विशाल अन्तः पुर परम मनोहर सुषमा रूप ॥

जिहि बिच रानिन कुँवर बधुनके भिन्न भिन्न आवास अनूप।।
सब प्रासादन माँहि बिराजहिं नन्दन बन तैं सुन्दर बाग ।
मङ्गल वल्लभ आदि कुंज सब ललित वापिका कूप तडाग ।।
सब रानी अरु पुत्रवधू सब अपने अपने सदन मँझार ।
बास करहि सानन्द सबन के हिये परस्पर प्रेम अपार ।।
अगणित सखी और बहु दासी सब की सेवा हेतु रहैं ।
रूपवती गुण भाग्य भरी सब अपनी सम ते आप अहैं ।।

कुण्डलिया—राजत भूपति भवन को, भूषण सरिस ललाम ।
अति सुन्दर आवास वर, कनक भवन जिहि नाम ।।
कनक भवन शुभ नाम दिव्य चिन्मय अति नीको ।
मुख्य भवन प्रभु—प्राणवल्लभा—जनकलली को ।।
जासु छटा कण पाय ब्रह्म लोकादिक भ्राजैं ।
तहँ प्रियतम युत नव दुलहिन श्री सियजू राजैं ।।

चौ०—कोट झलमलत चहुँदिशि ताके । सोहत सुभग कँगूरा जाके ।।
छविमय चारु द्वार चहुँ ओरी । लखि छवि होत शारदा भोरी ।।
प्रथमावर्ण माहिं छवि पूरी । देशान्तर कन्या अति रूरी ।।
बसहिं द्वितीयावर्ण सु धन्या । किन्नर गन्धर्वन की कन्या ।।
तीजे चौथे कक्ष मँझारी । देव नाग कन्या अति प्यारी ।।
शुभ पंचमावर्ण के भीतर । केलि कुंज हिंडोर कुंज वर ।।
वर बिश्राम कुंज सुख पुंजा । व्यारू कुंजरु भोजन कुंजा ।।
कुंज सिंगार रु कुंज स्नान की । सभा कुंज है सुखनिधान की ।।
अरु विचित्र वन आदिक सोहन । रहहिं राजकन्या मन मोहन ।।
षष्टावर्ण मनोहर भ्राजत । जिहि बिच वल्लभ कुंज विराजत ।।
चन्द्रकलादिक यूथ ईश्वरी । वास करहिं तहँ सद्गुणागरी ।।
सतयें स्वस्तिक भवन सुहावन । आगे शयन कुंज मन भावन ।।
बहु रतिपति बहु रति मदहारी । सोवहिं तहँ रघुबर सिय प्यारी ।।

लीला वर्णन

★ जगन और मंगला की लीला ★

कवित्त—चार घरी रैन रहै शेष जब तब ऊँचे
दुन्दुभी भवन माहिं दुन्दुभी सु बाजहीं ।
झाँझ झनकार करनाल भनकार मृदु
सरस सुहाई सहनाई साथ साजहीं ।
यूथेश्वरी चन्द्रकला और सब सखिजन
उठत ध्यावत हिय सिय रघुराज हीं ।
स्वस्तिक भवन में विराजै साजबाज साजि
प्रथम जगाय बाल बालिका समाज हीं ॥

सवैया—

सखियूथ की स्वामिनि लै कर बीण प्रभात की राग अलापति है ।
अपनी स्वर माधुरि तैं तिहुँ लोक की मानहुँ माधुरि मापति है ।
अनुराग रँगी पगी राग समाधि सप्रेम महा तप तापति है ।
तिहुँ लोक विमोहन दम्पति मोहन मोहन मन्त्र सो जापति है ॥

दोहा—दम्पति जागन समय वर, मन गुणि पवनकुमार ।
बाल सखन युत आवहीं, जहाँ शयन आगार ॥
संगीतक अति सरस सुनि; होत जानि जिय भोर ।
जगहिं जनक नृप नन्दिनी, रघुवर राज किशोर ॥

छन्द—तब शयन भवन मझार परिकर जानि समय सिधावहीं ।
करि तहाँ निज निज नियत सेवा युगल दर्शन पावहीं ।
परियङ्क मणिमय रुचिर तिहिं पर धवल मृदुल बिछावने ।
आसीन तिहिंपर प्रिया प्रियतम रति मनोज लुभावने ॥
अलसात गात जम्हात छिन छिन लुलित लसत कचावली ।
अंजन गलित दृग अधर अंजनरेख युत छवि अति भली ॥

सव्रण रदच्छद लसहिं शुभ नखचिन्ह युत हृदयस्थली।
स्रक मृदित विलुलित त्रुटित विथुरित विविध मणि मुक्तावली॥
अंसन भुजा दीन्हें परस्पर परम रूप निहारहीं।
दोउ वर बदन चन्द्रावलम्बी केश पाश सम्हारहीं॥
यह छबि मनोहर निरखि अनिनिष सबन हिय आनँद भरैं।
करि करि प्रणाम सप्रेम तन मन सकल निवछावरि करैं॥

दोहा—जान शिरोमणि दम्पती, गुण सुख शील निधान।
करहिं यथोचित प्रेम युत, सबन केर सम्मान॥

पुनि श्रीचन्द्रकला बड़भागिनि। मङ्गल थार साजि अनुरागिनि॥
दम्पति के सम्मुख धरि देहीं। ताहि दृष्टिभरि दोउ लखि लेहीं॥
पुनि सप्रेम सखियूथ पालिका। अर्पहिं सुरभित सुमन डालिका॥
सुमन उठाय पिया अरु प्यारी। सूंघहिं निज जन मन सुखकारी।
मुदित परस्पर नयनन लावहिं। रैनि सुरत आलस्य मिटावहिं॥
दानिशिरोमणि सहित विधाना। पुनि दोउ करहिं मुदित गोदाना॥
धन अपार युत धेनु सुहाई। गुरु वशिष्ठ गृह देहिं पठाई॥
समय जानि बाजन बहु बाजहिं। सखिजन मङ्गल आरति साजहिं॥

सवैया—कोउ सेज समीप खरी अति मोदभरी वर चामर ढारति हैं
कोउ लेकर बीजन पुष्पन को करि सेवन रूप निहारति है।
कोउ नाचत गावत साज बजावत है जय शब्द उचारति है।
सखि स्वामिनि चन्द्रकला इमि मङ्गल आरति प्रेम उतारति है॥

★ वल्लभकुञ्ज की लीला ★

पुनि शय्या तजि प्रियतम प्यारी। गवनहिं वल्लभकुञ्ज मझारी॥
मत्तमराल-युगल-गति-गामी। रसिक जनन के स्वामिनि स्वामी॥
शुचिहै अखिललोक-पावनकर। आय विराजहिं स्फटिकतखत पर
तहाँ सद्य सरयूजलझारी। मणिमय आनि धरहिं कोउ प्यारी॥
धरहिं आनि ढिंग सुरभित मंजन। दतुवन करहिं निवेदन कोउ जन

मुख पोंछन को वसन मनोहर। लहि कोउ ठाढे सेवा तत्पर ॥
यहिविधि दतुवन दोउन करावहिं। सेवकजन मन मोद न मावहिं
भण्डारी तिहि समय उदारा। खोलहिं भवन द्वार भण्डारा ॥

दोहा—अन्न वसन धन मणि विपुल, वाहन विविध विधान।
देहिं यथारुचि याचकन, को करि सकै बखान ॥

करि दतुवन अरु मुख प्रक्षालन। दम्पति पहिरहिं वसन सुहावन॥
पुनि दोउ रत्न खचित चौकी पर। राजहिं रसिक जनन के हितकर
मारुतसुत करि पद प्रक्षालन। देहिं सबहिं चरणोदक पावन ॥
तब परिकर हिय आनँद भरहीं। निज निज नियमित सेवा करहीं॥
तेहि अवसर प्रभु अनुज ललामा। आवहिं रूप शील गुणधामा॥
तिनहिं निहारि मुदित प्रभु परिकर। वन्दन करहिं प्रेमयुत सादर ॥
सबन यथोचित ते सम्मानहिं। पुनि दम्पति के निकट सिधावहिं
प्रेम सहित अति पुलक तनोरुह। वन्दहिं युग मृदु चरण सरोरुह॥

दोहा—सम्मानहिं अति प्रेमयुत, तिन कहँ रघुकुल दीप।
कर शिर परसि बिठावहीं, अपने परम समीप ॥

चन्द्रकला तब प्रभु रुख पावहिं। वल्लभ-भोग-थार सजि लावहिं॥
मक्खन मिश्री आदिक मेवा। प्रभु कहँ अर्पण करहिं कलेवा ॥
दम्पति सानँद पावहिं तेहीं। सादर सबन प्रसादी देहीं ॥
अचवन करि पुनि रत्न मंच पर। राजहिं बहु रति मन्मथ मदहर॥
प्रेम सहित कोउ पान खवावहिं। कोउ दोउन माला पहिरावहिं ॥
कोउ अति सुरभितइत्र लगावहिं। कोउ छबिलखि बलिहारी जावहिं
कोउ वीणा कर लै मद माती। राग अलापहिं सरस प्रभाती ॥
कोउ बाजन अति रुचिर बजावहिं। कोउ मधुर स्वर कीरति गावहिं

सवैया—मधुरस्वर कीरति गावतिहैं कोउ ताल बजावतिहैं अवला।
कोउ आवझ वीण पखावज बाद्य सितार अनूप मृदङ्ग भला।
कोउ सेवत चामर छत्र लिये कोउ बीजन ढारति हैं नवला।

इमि वल्लभ आरति प्रेम समेत उतारहिं स्वामिनि चन्द्रकला ॥

दोहा—निरखि सुहावन आरती, शोभा परिकर वृन्द ।
बन्दहिं दम्पति पदकमल, प्रेम मगन सानन्द ॥
युगल प्रसादी मालिका, सुरभि इत्र ताम्बूल ।
सब परिकर पावहिं तहाँ, प्रेम सुमङ्गल मूल ॥

★ सर्वतोष सभा लीला ★

पद्धटीक छन्द—

पुनि दम्पति अति सुषमानिधान । उठि अपर भवन गवनहिं सुजान
वह मनहुँ सकल सौन्दर्य कोष । शुभ नाम जासु है सर्वतोष
जहँ मणि स्तम्भ शोभित अपार । चहुँ ओर अनेकन खुले द्वार
गजदन्त विविध मणि खचित चित्र । गजमुक्ता-जालक अति विचित्र
तहँ फर्श गलीचा मृदुल केरि । विधि होत चकित चित जाहि हेरि
तिहि मन्दिर के बिच अति सुढार । झलमलत सिंहासन अति उदार
मृदु मखमल गादी हरित राज । शशि अङ्क मनहुँ निजसुत विराज
तिहि उपरि विराजहिं युगल आय । नखशिख अपारछवि कहिन जाय
युग आनन की द्युति गौर श्याम । मणि प्रभा मध्य छलकहिं ललाम
दृग मुख सहसा नहिं लखि सकात । अतिकान्ति विवश चकचौंध जात
सब अनुज सखा अरु दास यूथ । तहँ आवहिं सब परिकर वरूथ
करि करि दम्पति चरणन प्रणाम । सेवहिं सप्रेम सुख सुकृत धाम
जिन जिन हिय दम्पति दरश चाह । तहँ आवहिं ते सब सह उछाह
करि दर्शन पद वन्दन जुहार । गवनहिं समर्पि मानस उदार
कविवृन्द करहिं कलकीर्ति गान । वरणहिं विरुदावली अति सुजान
पावहिं अभिमत सम्मान दान । मनमुदित अशीसहिं बहु विधान
बन्दी समूह याचक निकाय । सब गवनहिं वांछित वस्तु पाय
पुनि अति आवश्यक राजकाज । तहँ प्रभुहिं निवेदहिं मंत्रिराज
प्रभु चतुर शिरोमणि करहिं तेहिं । जस जस चाहिय तस हुकम देहिं
सुनि बिदा होहिं मंत्री उदार । सब कार्य करहिं आज्ञानुसार

★ स्नानकुञ्ज की लीला ★

भुजंग प्रयात छन्द—

तबै आवहीं स्नानकुञ्जाधिकारी। लिये पालकी संग में द्वै सँवारी॥
लखैं रूप माधुर्य आनन्द पावैं। सबैं दम्पती अंघ्रि में शीश नावैं॥
कहैं प्रार्थना चित्त में नाथ धारो। भयो है समय स्नानकुंजैं सिधारो॥
तबै राम सीता उठैं स्नान काजैं। दुहूँ पालकी माँझ दोऊ विराजैं॥
सखी होहिं श्रीस्वामिनी संग सारी। चलैं राम साथैं सखा दास भारी॥
करैं गोन यों स्वामिनी स्वामि दोऊ। लजैं काम की कामिनी काम सोऊ

दोहा—समयोचित निज सखिन सँग सिय स्वामिनि सुकुमारि।
गवनहिं अपने स्नान की, शोभनकुंज मझारि॥
समयोचित सेवक सखा, सङ्ग लिये श्रीराम।
अपनी स्नान निकुंज में, प्रविशहिं जग अभिराम॥

स्नानकुंज सोहत नीकी अति। वरणि सकै तिहिं अस केहिकी मति॥
चहुँदिशि ताके कोट विराजै। ऊपर रुचिर कँगूरा भ्राजै॥
कोट समीप लसत सुख दैनी। उच्च विशाल दिव्य द्रुम श्रेणी॥
आगे गोलाकार सुहावन। फल वृक्षावलि चित्त लुभावन॥
तिहिं आगे सोहत है अति भलि। सुन्दर सुरभि सुमन वृक्षावलि॥
आगे लता गुल्म तरु राजी। रंग रंग सुमनन तै भ्राजी॥
कुंजमध्य सर सोहत अति भल। मणिसोपान विभूषित उज्वल॥
प्रतिदिन सरयूजल नल द्वारा। आय भरत छनि ताहि मझारा॥
सोरठा—जल वह परम पुनीत, कटि प्रमाण सर में रहत।
समय सुखप्रद शीत, उष्ण होत है यन्त्र तैं॥
रुचिर स्नानसर पाहिं, मन्दिर विलसत फटिकमय।
स्नान सौंज तिहि माहिं, यथा स्थान लागी रहत॥
तेहि समीप व्यायाम मही है। ताकी छबि अति छाय रही है॥
वर बलदंड करेला मुद्गर। सोहत बहु प्रकार तिहिं भीतर॥

औरहु वस्तु अनेक बरण की। सोहत तहँ व्यायाम करण की॥
प्रभु पहिले तिहि माहिं पधारहिं। उतरि यान तैं बसन उतारहिं॥
कसि लङ्गोट जङ्घिया धारहिं। कसरत करहिं अनेक प्रकारहिं॥
स्वेद बिन्दु अस झलकहिं आनन। जनु इन्दीवर पर तुषार कण॥
पुनि अपने प्रभु स्वेद सुखावहिं। फटिक भवन के भीतर आवहिं॥
तहाँ मलय चौकीपर राजहिं। सेवक गण सेवा में भ्राजहिं॥
सानि रुचिर उबटन इत्रन तैं। प्रभु तन उबटहिं मृदुल करन तैं॥

दोहा—उबटहिं शुभ श्री अंग, भय अरु चाह समेत ते।
रँगे प्रेम के रङ्ग, धन्य जन्म तिन्ह कर अहहिं॥

सेवक श्री तनु उबटि चुकहिं जब। स्नानशाल बिच प्रभु प्रविशहिं॥
स्वर्ण रत्न चौकी तहँ भ्राजहिं। तिहि पर सुषमाधाम विराजहिं॥
छतबिच नतमुख एक फँवारा। सूक्ष्म छिद्र तिहि माहिं अपारा॥
तिहि द्वारा शीतोष्ण सुखद जल। बरसत है प्रभु तन पर निर्मल॥
यहि प्रकार प्रभु करहिं निमज्जन। मृदु मृदु मलहिं भूरि भागी जन॥
तनु उबटन छुटि जात सकल जब। मज्जनसरबि व प्रभु प्रविशहिं तब
स्नान यथारुचि तिहिं बिच करहीं। छबि लखि सकल मोद मन भरहीं।
मज्जनकरि यहिविधि रघुनन्दन। आवहिं स्फटिकभवनबिच छबिघन

दोहा—उज्वल कोमल वसन तैं, पोंछत हैं श्री अङ्ग।
पीताम्बर पहिरहिं रुचिर, जासु तडित द्युति रङ्ग॥

चौकी त्वरित बिछावहिं कोउ जन। कोउ तापर अतिकोमल आसन
कोऊ सन्ध्या पात्र स्वच्छ करि। धरहिं तहाँ श्रीसरयूजल भरि॥
केसर घसि भरि कनक कटोरी। आनि धरहिं कोउ सुन्दर रोरी॥
सुरभित सुमन तोरि कोउ अनुचर। दोना भरि लै धरहिं तहाँ पर॥
प्रभु पीताम्बर पहिर सुहावन। अनुपम उत्तरीय करि धारण॥
आय विराजहिं तिहि चौकीपर। तिलक करहिं वर दामिनिद्युति हर
पुनि प्रभु धर्मधुरन्धर गुणनिधि। सन्ध्योपासन करहिं यथा विधि॥

करहिं सखा सब अरु सब दासा। सेवा नियत समेत हुलासा ॥
दोहा—तब शृंगार निकुंज के, अधिकारी परधान।
आवत लीन्हे सङ्ग में, संन्दर तख़्तरवान ॥

★ शृंगारकुञ्ज की लीला ★

सन्ध्या करि प्रभु जन हितकारी। बैठहिं तखतरवान मझारी ॥
गवन सिंगारकुंज दिशि करहीं। सखा दास जयशब्द उचरहीं ॥
शोभा तहँ की कौन बखानै। जिन्ह नयनन निरखी तेइ जानैं ॥
एक ओर ताम्बूल सदन है। एक ओर वर इत्र भवन है ॥
पुष्पसदन इक ओर मनोहर। इक दिशि भोजनशाल रुचिरतर ॥
भूषण सदन एक दिशि राजत। वसनसदन इक ओर विराजत ॥
कुंज मध्य इक मन्दिर सोहत। रचना जासु विश्व मन मोहत ॥
मखमल फर्श बिछी तिहि मांही। बूटाबेल रुचिर जिहि मांही ॥
दोहा—मध्य भाग में झलमलत, सुंदर मंच विशाल।
सुषमा जाकी निरखतहिं, लोचन होत निहाल ॥
अतिविशाल मणिमुकुर मनोहर। सोहहिं चहुंदिशि मंदिर भीतर
प्रभु शृंगार वस्तु वर जेती। धरी रुचिर चौकिन पर तेती ॥
प्रभु पधारि तिहिं मन्दिर भीतर। राजहिं आयत रत्न मंच पर ॥
मेचक कुंचित सुन्दर केशन। प्रथम सँवारहिं जग-जीवन-धन ॥
तिहि अवसर मुद्रिका दिपत भल। गगनमध्य विहरत जनु मङ्गल ॥
सेवक जन पट सुंदर लावहिं। प्रेम समेत प्रभुहिं पहिरावहिं ॥
विविध भाँति मुक्तामणि भूषण। हर्षित हृदय करावहिं धारण ॥
शिशु सेवक तब प्रभु रुख पाई। गवनत त्वरित चरण शिर नाई ॥
हरिगीति—उत स्नान करि निज स्नानकुंज अनूपतैं सियस्वामिनी।
पगधारि निज शृंगारकुंज मझार जग अभिरामिनी।
मणिमंच उपरि विराजहीं तब प्रीतियुत सब सहचरी।
शृंगार करवावहिं तिनहिं आनन्द शोभा गुण भरी ॥

है चुकत ही शृंगार जो शिशु दास प्रभु पठयो वही।
स्वामिनि चरण वन्दत न जिनकी कमलदल समता लही।
करुणामयी करि दृष्टि स्वामिनि पाणि तिहिं शिर पर धरै।
तिहिं समय जस सुख होत ताकहँ कौन तिहि वर्णन करै॥
तिहि आगमन तैं जानि प्रभु ढिंग गमनबेला सुखमयी।
अति हर्ष हियबिच होत तिहि सिय चतुरता करि गोवई।
यूथेश्वरी श्री शशिकला तब हृदय गति पहिचानि के।
मणिजटित यान लिवाय राखत स्वामिनी ढिंग आनि के॥
तिहि मध्य राजि प्रिया पियाशृंगारकुंज सिधावहीं।
यूथेश्वरी संग चलत सखिजन सहित मृदु स्वर गावहीं।
जब स्वामिनी शृंगारकुंज मंझार उतरहिं आयके।
मिलि युगल परिकर करहिं जय जय मोद अति उपजायके॥

दोहा-राजहंसिनी-गति-गमनि, सियजू पिय ढिंग जाहिं।
सुरभित कोमल सुमन दल, लिये अंजली माहिं॥
सुमनांजलि अर्पहिं पियहिं, सियजू हिय सकुचाय।
पिय उठि सादर पाणिगहि, लेहिं निकट बैठाय॥
बाम भाग राजत प्रिया, प्रियतम दहिनी ओर।
अनुपम छवि लखि लाजही, रति रतिनाथ करोर॥

युगल परस्पर इतर लगावहिं। प्रेम सहित ताम्बूल खवावहिं॥
धूप दीप पुनि अर्पहिं परिकर। अर्चन करहिं मुदित मन सादर॥
आवहिं तब प्रभु अनुज ललामा। करहिं युगल पदपद्म प्रणामा॥
सम्मानहिं तिनकहँ सिय रघुवर। पुनि राजहिं सुन्दर चौकीपर॥
यूथेश्वरी साजि तिहिं अवसर। आनि धरहिं शृंगार भोग वर॥
जेवहिं प्रेम भरे पिय प्यारी। लहहिं प्रसाद सकल अधिकारी॥
अचवन करि श्रीसिय रघुनन्दन। राजहिं ताहि मंचपर छबिघन॥
स्रक सुगन्ध ताम्बूल मनोहर। अर्पहिं दुहुँन प्रेम युत परिकर॥

दोहा-अनुज सकल अरु पवनसुत, सखी सखा अरु दास।
स्रक सुगन्ध ताम्बूल सब, पावहिं सहित हुलास॥

सवैया—

शुभ साजि शृंगारकि आरति चन्द्रकला तब आय उतारति हैं।
परिछाँह परै मणि काचम माहिं सो प्रेम महाछवि धारति हैं।
जनु दर्शन हेतु जुरी तहँ आय उमारु रमा रति भारति हैं।
छबि देखि बिमोहि उतारति आरति हैं तन मानस वारति हैं॥

दोहा-अनुज सखा परिकर सकल, करत सप्रेम प्रणाम।
लखत प्रेमयुत मुदित मन, दम्पति रूप ललाम॥

★ श्री रत्न सिंहासन लीला ★

तब सादर श्रीमारुत नन्दन। करत मुदित मन प्रभुहि निवेदन॥
जन मन कामद हे सुख सागर। ठाढे दर्शक विपुल द्वार पर॥
सेवक पौर सखा अधिकारी। दरश प्यास सब के हिय भारी॥
सबन प्याय छबि अमिय सुहावन। गवनहुँ नाथ रत्न सिंहासन॥
सुनत वचन दम्पती सिधारहिं। सब अधिकारी आय जुहारहिं॥
रथपर राजहिं सिय रघुनाथा। देखि करहिं सब नयन सनाथा॥
रथ की शोभा कही न जावै। निरखि निरखि रवियान लजावै॥
रथपर राजत बजत निशाना। बन्दी बदहिं शब्द शुभ नाना॥

दोहा—सज्जित वाजि गजादि रथ, पदचर नाना यान।
भली भाँति सों करत हैं, श्रेणी बद्ध पयान॥
रथारूढ श्रीराम सिय, गवनहिं आनँद कन्द।
सङ्ग अनुज सोहहिं सकल, सखा सुसेवक वृन्द॥
पुर नर नारि निहारहीं, असवारी सुख मूल।
हर्षहिं वर्षहिं प्रेमनिधि, मंगल लाजा फूल॥
पूरन सबकी कामना, अखिल लोक अभिराम।
रत्न सिंहासन द्वार पै, पहुँचत हैं गुण धाम॥

उनरियानतैं श्रीसिय रघुवर। गवनहिं सुन्दर मन्दिर भीतर ॥
चौक बिराजत तहां सुहावन। ताके मध्य वेदिका शोभन ॥
अति विशाल वह मणिमय राजहिं। सोपानन की छबि अति छाजहिं
तिहि बिच लसत भवन अतिनीको। मानहुँ अखिल भुवन छबिटीको
सुघटित मणिमय खम्भ विशाला। महराबन भीतर मणि जाला ॥
चित्र पुत्रिका खम्भन माहीं। बनी जिनहिं लखि रति सकुचाहीं ॥
श्रीरघुवर सिय तहां पधारहिं। जयति जयति सब लोग उचारहिं ॥
प्रेमसहित दम्पतिहिं जुहारहिं। शाभा लखि तन मन धन वारहिं ॥

(हरिगीतिका छन्द)

तेहि भवन के बिच अति मनोहर कल्पतरु जगमग करै।
तेहि तर लसहिं शुभ रत्नसिंहासन विलोकत चित हरै ॥
सिंहासनोपरि रत्नवेष्टित कमल बहुदल सोहई।
बिच कर्णिका भल चन्द्रमा दिनकर अनल तत्वनमयी ॥
तिहि पर लसहिं गद्दी मृदुल मसनद मनोहर राजहीं।
तिहि उपरि दामिनि घन वरण हिय हरण युगल विराजहीं ॥
गहि चमर दहिनी ओर सेवहिं लखण प्रेमानँद भरे।
प्रभु पृष्ठ दिशि सोहहिं भरत शुभ छत्र शशि छवि हर धरे ॥
शत्रुघ्न सेवहिं बामदिशि तैं व्यजन सुन्दर कर लिये।
मारुति खरे करजोरि सम्मुख पदकमल दृग अलि किये ॥
कपिपति सुकंठादिक सखा अरुदास सब सेवा करैं।
ते धन्य जे यहि ध्यान धनतैं प्रेम मन मन्दिर भरैं ॥
तिहि समय चारिहु वेद अरु सुरमुख्य ऋषि मुनि आवहीं।
प्रभु सबहिं सत्कारहिं यथोचित लखि परम सुख पावहीं ॥
सब होहिं अचरज चकित प्रभु की सरल प्रकृति निहारिके।
दृग पत्रपुट करि पियहिं छबिरस देह सुरति विसारि के ॥
प्रभुतन सजलघन वरण सोहत युग चरण अरविन्द से।
झूमत रहहिं तिनपर सुमुनिजन मन सदैव मिलिन्द से ॥

अँगुरियन पर नख जनु कमल पखुरियन पै मुक्ता लसैं।
जङ्घा रुचिर वर जानु उरु कटि बसन दामिनि को हँसैं॥
आयत हृदय भुजमूल उन्नत बाहु युगल विशाल हैं।
दरग्रीव सुषमासींव भूषित हार अरु बनमाल है॥
हनुललित कलित कपोल सुन्दर अधर द्विज नासा बनी।
मुसकानि मृदु दृग कंज से शुभ दृष्टि करुणामृत सनी॥
भ्रूबङ्क कामकमान सम शशिशकल भाल विशाल है।
झलमलत तिलक त्रिरेख मेचकचिकुर जनु अलिमाल है॥
मणिमय मुकुट शिर परलसत लखि लजत अमित दिनेश हैं।
शुभ अंग अंगन बिच सजे आभरण सकल सुदेश हैं॥
प्रभुवल्लभा मिथिलेश नन्दिनि वाम भाग विराजहीं।
तनु कान्ति लखि बहु चंचला छबि देखि बहु रति लाजहीं॥
अँग अंग अनुपम माधुरी लखि शारदा ठगिसी रहै।
सकुचहिं कहत श्रुति शेष शारद प्रेम तेहि केहि बिधि कहै॥
दम्पति सुछबि लखि होत सब कृत कृत्य निरखनहार हैं।
स्तुति करहिं सुर मुनि वेद बन्दी वदत जय जयकार है॥
तिहि समय पवनकुमार सजि मणिथार अपने कर धरैं।
अति प्रेम संयुत आरती सविधान दम्पति की करैं॥

छन्द—उतारहिं आरति मारुत नन्दन दम्पतिकी सजिके मणिथार।
परै बहु वर्णन रत्नमयूख शुभारति-वर्ति शिखान मझार॥
दिपै वह थार सविम्ब मनो प्रभु केर प्रतापदिनेश निहार।
अनेक दिवाकर आप सप्रेम करैं परदच्छिन बारहिं बार॥

दोहा—प्रभु प्रसाद माला इतर, पान मिलहिं सब काहु।
लेहिं सकल अति भक्ति युत, जानि अलौकिक लाहु॥

(केलिकुंज और राजभोगकी लीला)

सब समाज युत पुनि रघुनन्दन। निज मन्दिर गावनहिं जग वन्दन
मगविच देत मनोहर दर्शन। सफल करत सबहीके लोचन॥

पहुँचहिं सुन्दर राजद्वार पर। तहँ करि बिदा समाजहिं सादर ॥
प्रिया सहित रसिकन हितकारी। पावनहिं केलिनिकुञ्ज मझारी ॥
समयोचित सब सेवक जेऊ। दम्पति संग जाहिं तहँ तेऊ ॥
तहँ पिय प्यारी खेलहिं चौसर। दाव लगाय अमूल्य प्रेम कर ॥
कबहुँ बजावहिं बाँसन नाना। कबहुँ करहिं मधुर स्वर गाना।
कबहुँ बैठि दोउ हँसि बतरावहिं। सुख उपजावहिं चित्त लुभावहिं

दोहा—पति ब्रतनतैं वन्दिता, सिय स्वामिनि गुण खानि।
गवन रसोई भवन में करहिं समय अनुमानि ॥

पियहियकी रुचि जानन हारी। भोजन वस्तु सँभारहिं सारी।
प्रभु एकान्त राजि तिहि अवसर। पत्र पढहिं सब गुप्तचरन कर।
शुभ प्रार्थनापत्र जे आवहिं। तिनहिं पढ़हिं अरु हुकम चढ़ावहिं ॥
यहि बिधि कार्य करत शुभ अवसर। प्राप्त होत है राजभोगकर ॥
तब पिय निकट प्रिया चलि आवहिं। बैठि समीप महा छवि पावहिं ॥
तब भोजनशाला अधिकारिनि। करहिं आय विनती हिय हारिनि ॥
सुनि प्रभु अनुजन सखन बुलावहिं। तिनयुत भोजन सदन सिधावहिं
आसन दिव्य विशाल मृदुलतर। दम्पति आय विराजहिं तापर ॥

दोहा—पिय प्यारी के उभयदिशि, अनुज सखा प्रियदास।
श्रेणी बाँधि विराजहीं, हिय धरि परम हुलास ॥

तबहिं सुआर चतुर अनुरागे। धरहिं रत्न चौकी सब आगे ॥
षटरस-व्यंजन-पूरित-थारा। लै आवहिं पुनि निपुण सुआरा ॥
प्रथम दम्पतिहिं अर्पण करहीं। पुनि सबहिन के आगे धरहीं ॥
भोज्यपदार्थ अनेक विधाना। नाम कौन करिसकै बखाना ॥
सब परिकर समेत पिय प्यारी। जेवहिं रति मनसिज मदहारी ॥
जेंयि करहिं अचवन पिय प्यारी। राजहिं मणिमय महल मझारी ॥
मारुत सुवन परम बड़भागी। सिय रघुवर प्रसाद अनुरागी ॥
युगल प्रसादी थार उठावहिं। युगल प्रसादी सबन पवावहिं ॥

दोहा—परिकर युत मारुत तनय, जेवहिं अति सानन्द।
पुनि अचवन करि जाहिं सब, जँह दम्पति सुख कंद॥
परिकर अर्पहिं दम्पतिहिं, पान इत्र अरु माल।
निज निज सेवाकरि सुछबि, लखि लखि होहिं निहाल॥

सो०—युगल प्रसादी पान, इत्र माल पावहिं सकल।
परिकर सुकृत निधान; धन्य धन्य ते प्रेम सब॥

छन्द—समय बिचारि दास रत्न हेम थार साजहीं।
मृदंग ताल वेणु आदि बाजने सुबाजहीं॥
लिये सुछत्र चामरादि भ्रातृ मित्र सेवहीं।
त्रिलोकनाथ नाथ ईश ईश देव देव हीं॥
तिया सु गावहीं सुने लजैं अनेक भारती।
करैं सप्रेम वायुपुत्र राजभोग आरती॥
निहारि रूप माधुरी महान हर्ष में भरैं।
प्रणाम प्रेम युक्त सर्व सीयराम सों करैं॥

(विश्राम कुंज और उत्थापन कुंज की लीला)

तब उठि सखिन सहित सियस्वामिनि। बालक राजहंसगति गामिनि
निज विश्राम भवन के भीतर। गवनहिं पतिपद धरि उर अन्तर॥
तीनिहुँ देवर बधुन समेता। शयन करहिं तिहिं रुचिर निकेता॥
सकलसखी स्वामिनिअनुरागिनि। सेवहिं सबहिं परमबड़भागिनि॥
निज समाज युत श्रीरघुनन्दन। उठि गवनहिं सेवक चित चन्दन॥
निज बिश्राम भवन बिच जाहीं। शोभा तासु जात कहि नाहीं॥
तीनिहुँ बन्धुन सहित तहाँ पर। शयन करहिं सुषमा सुख सागर॥
दास सखा सब सेवहिं नीके। प्राण प्राण गनि जीवन जीके॥
दोहा—मारुत सुतके भाग्यकी, महिमा किमि कहिजाय।
प्रेम सहित श्रीराम के मृदुल पलोटहिं पाय॥

कछुक समय मध्यान्होपरि जब । बीत जात है श्रीसियजू तब ॥
उठि गवनहिं हंसी गति बारी । उत्थापनकी कुञ्ज मँझारी ॥
निज बिश्राम कुञ्ज के भीतर । उत जागहिं रघुवर सुख सागर ॥
पुनि गवनत हैं जन हितकारी । उत्थापनकी कुञ्ज मँझारी ॥
मिलि तहँ मम्पति अति सुख पावहिं । प्रेमभरे मृदु हँसि बतरावहिं ॥
बिविध सुगन्धित सुमन सुघावहिं । इतर लगावहिं पान खवावहिं ॥
बहु बिनोद दोउ करहिं परस्पर । लखहिं असाधारण छबि दृग भर ॥
युग परिकर वह शोभा निरखहिं । धन्य मानि आपहिं अतिहर्षहिं
दोहा—दोउनके परिकर तबै, जानि समय सुखसार ।
दुहुँन करावहिं प्रेम युत, उत्थापन शृंगार ॥
करि शृंगार सिया अरु रघुवर । राजहिं मणिमय सिंहासन पर ॥
चन्द्रकला तर मेवा लावहिं । भाव सहित दम्पतिहिं पवावहिं ॥
मेवा पाय करहिं दोउ अचवन । छवि सागर रसिकनके जीवन ॥
तब कोउ दोउन पान खवावहिं । कोउ माला धारण करवावहिं ॥
अति सुरभित कोउ इतर लगावहिं । हियके भीतर मोदन मावहिं ॥
साजबाज साजे सब सखिजन । करहिं दुहुँनके आगे गायन ॥
युगल प्रदासी वह मेवातर । बीरी माला इतर मनोहर ॥
सब कोउ पावत हैं तिहिं अवसर । तरसत हैं जाकहँ बिधि हरिहर ॥
दोहा—चन्द्रकला यूथेश्वरी, दम्पतिं सम्मुख आय ।
तब उत्थापन आरती, करहिं हिये हुलसाय ॥
छन्द—मंजीर झाँझ मृदंग बीणा बेणु कलरव बाजहीं ।
करनाल शंख निनाद वर दुन्दुभी घन जिमि गाजहिं ॥
इमि होत उत्थापन समयकी आरती अभिराम है ।
छवि निरखि परिकर प्रेमयुत दम्पतिहिं करत प्रणाम है ।

★ गुरु जन दर्शन एवं राज्यकार्य लीला ★

दोहा—बन्धु सखा सेवक सकल, लिये आपनी साथ ।
चक्रवर्तिजूके निकट, गवनत हैं रघुनाथ ॥

तीनिहुँ लघु भगिनिन सखिन, लहि अपने सँग माहिं।
अभिरामिनि सिय स्वामिनी, सासुसदनमें जाहि॥
सासुन के पगलागि सब, बधू शुभाशिष पाय।
सादर सेवहिं प्रेम युत, सदा वचन मन काय॥

पुत्र बधुन पर सासु सब, प्रेम करहिं अति भूरि।
सन्तत मन जुगवत रहहिं, गिनहिं स्वजीवन मूरि॥
यद्यपि दासीजन विपुल, शुभ गुण शील निवास।
तदपि बधू गृह काज सब, करहिं समेत हुलास॥

विनय शील अरु चातुरी, निरालस्यता पेखि।
रहहिं सासु सन्तत मुदित, धन्य स्वजीवन लेखि॥

उत श्रीरघुकुल कमल रवि राजिवलोचन राम।
पितु के चरण सरोज बिच, सादर करहिं प्रणाम॥

प्रेम सहित हिय लावही, आशिष देहिं महीप।
चिरजीवहु मम प्राण प्रिय, रघुवर रघुकुलदीप॥
रामानुज सेवक सखा, भूपहिं करहिं प्रणाम।
सबनि देइ आशिष कहहिं, तुम मम प्रिय जिमि राम॥

चक्रबर्ति संग राजकुंवर वर। गवनहिं न्यायालय के भीतर॥
गुरु वशिष्ठ सब मंत्री द्विजवर। आवहिं तहां प्रतिष्ठित पुरनर॥
नीति तत्ववित सकल विमलमति। सोहहिं धर्म मनहुँ धरि मूरति
तिन्ह सँग राजकाज रघुराई। करहिं मुदित पितु आयसु पाई॥
सूक्ष्म बुद्धि न्याय प्रियताई। लखि प्रभु की सब करहिं बड़ाई॥
करहिं कार्य प्रभु सन्तत सोई। जिहि तैं प्रजा परमहित होई॥
कछुक समयलों श्रीरघुनन्दन। राजकाज इमि करहिं सुहावन॥
पुनि पितु आयसु पाय कृपाला। गवनहिं अवलोकन गोशाला॥
छन्द-गोशाल परम विशाल जहँ अति मृदुल सम सैकत मही।
अति उच्च बहुतरु सघन जिनतैं छांह अविचल ह्वै रही॥

तृण हरित दूर्वा राशि जहँ तहँ स्वच्छ जलकुल्या भरी ।
बहु भांति अन्नत तैं भरी अगणित महा डलियां धरी ॥
तहँ लसहिं धेनु अनन्त नाना वरण परम-सुहावनी ।
निज गुणन तें अरु रुचिरतातैं कामधेनु लजावनी ॥
पुष्टांगि सब पीनोधिनी सब मत्तगजगति गामिनी ।
निरखत हृदय पावन करणि मन हरणि दृग अभिरामिनी ॥
प्रभु आगमन को जानि अवसर सकल उत्सुकता भरीं ।
निज लम्ब कर्णन अग्र करि प्रभु बाट जोवहिं सब खरीं ॥
आवत प्रभुहि अवलोकि छबि रस पियहिं अति सुख पावहीं ।
तजि वत्स सुधि हुँकार करि प्रभु के निकट चलि आवहीं ॥
प्रभु प्रेम युक्त दुलारि बहु मिष्ठान्न तिनहिं खवावहीं ।
गोगण मझार उदार अति अनुराग वचन सुनावहीं ॥
नहिं धेनुसम मोहि अन्यप्रिय यह अहहिं अति हितकारिणी ।
उपकार करणि असीम सबके उभयलोक सुधारिणी ॥
जे कर्म मन वच याहि रक्षहि मोर ते प्रिय दास हैं ।
जग देवदुर्लभ भोग करि पुनि बसत हमरे पास हैं ॥
जग जन्मि जे या भुक्ति मुक्ति स्वरूपिणिहिं नहिं सेवहीं ।
तिनकर वृथा जग जन्म ते अति कुपित करहिं त्रिदेव हीं ॥

दोहा—इमि गोशाल विलोकि प्रभु, अवलोकहिं वृष वृन्द ।
गवनहिं देखन हेतु पुनि, हयशाला सुख कन्द ॥
अश्वशाल गजशाल रथशाल विलेकि उदार ।
विद्या कला विभाग की, ते पुनि करहिं सँभार ॥
सेना भाग सँभारि पुनि, आवहिं पितु के पास ।
समाचार सब के कहहिं, सुनि पितु भरहिं हुलास ॥

★ उपवन बिहार लीला ★

पुनि पितु के चरणनकरि प्रणाम । सानुज गवनहिं विश्वाभिराम ॥

सँग चलहिं छबीले सखायूथ । अनुगमन करहिं सेवक बरूथ ॥
यहि विधि गवनहिं प्रभु राजद्वार । जहँ सज्जित रथ हय गयअपार
प्रभु आयसुतब सारथी पाय । देदीप्यमान रथ कहँ बढ़ाय ॥
ले आवत हैं प्रभुके समीप । तब छवि निधान रघुवंश दीप ॥
प्रभु होंहिं त्वरित तिहिबिच सवार । सुकृतीजन जोहहिं छवि अपार
प्रभुसखा अनुज अनुचर उदार । सब होहिं सवारिनमें सवार ॥
यहि विधि पुरवाहिर करहिं गौन । वह छबि वरणै अससुकविकौन
तहँ शुभ उपवन श्रीराम केर । बहु नन्दन लाजहिं जाहि हेर ॥
ताके सुद्वार पर सब समेत । रथसों उतरहिं शोभानिकेत ॥
उपवन-अधिकारी तहाँ आय । वन्दतहै प्रभुपद शीशनाय ॥
पुनि परिकर युत प्रभु अति उदार । प्रतिशत हैं निज उपवन मझार
दोहा—उपवन मध्य पधारि प्रभु, दास सखानुज सङ्ग ।
मन्द मन्द विचरहिं तहाँ, शोभा लखहिं अभङ्ग ॥

कवित्त—मणिमय आलवाल नहर रसाल सर
जल यंत्र जाल बने परम सुहावने ।
सफल सफूल भल सघन बिचित्र सो हैं
वल्लीतरु गुल्म कल्पपादप लुभावने ॥
ललित निकुञ्ज बैठे शुक पिक सारिकादि
बोलत मधुर श्रुति अमिय पियावने ।
झूमैं भृंग कंजनपे मानो प्रेमी जन मन
प्रभु पद पद्म पाय सुख सरसावने ॥
लीलाअद्रि सो हैं दिव्य झरना झरहिं स्वच्छ
चादर निरन्तर चलत जातैं ठोरि ठोरि ।
ललित विशाल सोहैं धारागृह ठाम ठाम
केलिमृग आवत नहावल हैं दोरि दोरि ॥
पद्मिनीन मध्य बहुवर्ण मीन केलि करैं
राजहार भक्षै विस किसलय तोरि तोरि ॥

कल्पद्रुम वीथिन में बैठे हैं विहंग प्रेम
सीताराम सीताराम रटैं पाँति जोरि जोरि ॥
देखि श्याम सुन्दरको मेघ मानि मोर नचैं
पिहु पिहु बोलत पपीहा प्रेम भीने हैं।
देखि मुख चन्द्रोदय मानिके चकोर बृन्द
मुदित लखत इकटक दृग दीन्हें हैं।
आनन सरोज गनि झूमैं भृंग गन्ध लुब्ध
वचन सुनत मृग ह्वै रहे अधीने हैं।
बाग देखिबेके मिष स्वछबि दिखाय प्रेम
इन सब जीवन निहाल अति कीन्हे हैं ॥

षट्पद—निरखि निरखि उपवन की शोभा अति सुख पावत।
निज छबि सबहि दिखाय हृदय आनन्द बढावत ॥
मधुर मधुर हँसि सखा अनुजगण सों वतरावत।
कौतुक विविधप्रकार बाल सेवकन दिखावत ॥
छवि धाम राम आरामकी, मणि वीथिनमें संचरहिं।
फल सुमनगुच्छ दल हार भल माली जन अर्पण करहिं ॥

छन्द—यहि भाँति श्रीरघुनाथ उपवन माहिं करत विहार हैं।
पुनि सकल सहचर सहित आवत मध्य भाग मझार हैं ॥
तहँ महल परम विशाल लालमयी मनोहर सोहई।
शुभ वेदिका आगें विराजति बहु वरण रत्नन मई ॥
तेहि मध्य अति देदीप्यमान महान सिंहासन लसै।
निज विविध वरण मयूख तैं वह दामिनी द्युतिको हँसै ॥
तिहि उपरि परमसुजान शोभाधाम आय विराजहीं।
सब अनुज अरु सेवक सखा सेवत चतुर शिरताजहीं ॥
तहँ देश देशान्तरनिके अगणित गुणीजन आवहीं।
निज निजकला कौशल प्रभुहिं दरसाय हिय हुलसावहीं ॥

प्रभु गुण निहारि सराहि अति अभिमत निछावर देत हैं।
ते होत अति कृतकृत्य गवनत चरण वन्दि निकेत हैं ॥
पुनि प्रभुहि जे कछु कहन चाहहिं ते तहां चलि आवहीं।
प्रभु सुनहिं तिनकी प्रार्थना सम्मानि भवन पठावहीं ॥
यह कृपामयकी रीति प्रार्थी बिमुख कबहुँ न जात हैं।
निज काज तजि तिन हीय की ते सुनत सादर बात हैं ॥

दोहा—बाग निरखि गुणि गणन लखि, सुनि प्रार्थना उदार।
गवन करन चाहहिं जबै, श्रीरघुवंशकुमार ॥
अधिकारी तब अर्पहीं, इत्र माल अरु पान।
पुनि उठि गवनहिं सब सहित, सुन्दर शील निधान ॥

★ कंदुकादि क्रीड़ा और सरयूबिहार लीला ★

आराम द्वार पर सब समेत। पहुँचत हैं शुभ गुण-गण-निकेत ॥
तब अश्वशाल अधिपति विनीत। हय लावत प्रभु आगे सप्रीत ॥
प्रभु होत त्वरित तिहिपर सवार। छबि छलकत तिहि अवसर अपार ॥
हय चढ़े आप पर प्रभुहिं जानि। अति मुदित होत तन सफल मानि ॥
निज लेत रुचिर ग्रीवा मरोर। पग ठुमुकि धरत जिमि नचत मोर ॥
प्रभु अनुज सखा अनुचर अपार। सब होत चपल अश्वन सवार ॥
यहि विधि सुखसागर करहिं गौन। छबि देखि शारदा रहत मौन ॥
श्री लखण बाग अरु भरत बाग। शत्रुघ्न बाग लखि सानुराग ॥
गवनहिं श्रीसरयू सरित तीर। लहि संग सखानुजदास भीर ॥
तहँ नानागति फेरहिं तुरंग। निज बन्धुन अरु प्रिय सखन संग ॥
कन्दुक सों क्रीडहिं बहु प्रकार। रचि प्रथक प्रथक साथिन कतार ॥
निज निज जय कारण करहिं दाव। झगरहिं सप्रेम कौतुकी राव ॥
इक यूथ अपर यूथहिं हराय। जयकार करहिं तारी बजाय ॥
तब अपरयूथ उत्साह धारि। रचि खेल देत है ताहि हारि ॥

अहमहमिकया यहि विधि सुजान । खेलत हैं को करि सकै गान ॥
प्रभु कबहुँ लरावहिं ललित चंग । निज अनुज और प्रिय सखन संग ॥

दोहा—अतिमृदु सैकत पुलिन में सब समेत श्रीराम ।
खेल अनेकन खेलहीं, करहिं विविध व्यायाम ॥

विविध भांति क्रीडा करि रघुवर । गवनहिं श्रीसरयू घाटन पर ॥
ते विशालतर भव्य विराजहिं । जिनकी रचना लखि विधि लाजहिं
ठाम ठाम तरु लसहिं सुहावन । निज छबि तैं तरुराज लजावन ॥
शुक पिकादि बहु पक्षी तिनपर । बैठे गान करहिं मधुरस्वर ॥
विहरहिं जहँ तहँ मत्त मराला । मोर नचत गूंजत अलि माला ॥
त्रिविध पवन मन सुख उपजावन । बहत अखिल श्रम पुंज नशावन
घाटन के आगे छवि पूरी । मणिमय सोपानावलि रूरी ॥
तिनकी अति सुन्दर परिछाहीं । झलकत श्रीसरयू जल माहीं ॥

दोहा—सोपाननकी पंक्ति ढिग, अति विशाल छवि पूरि ।
घाटरक्षिणी लसहिं बहु, बुर्जैं कछु कछु दूरि ॥
पृष्ठस्थल तिनके बने, अति रमणीय बिशाल ।
चहुँदिशि तिनके लसति हैं, कनक कटहरन माल ॥

सकल बुर्ज पृष्ठनके ऊपर । चन्द्रकांतमणि-सिंहासनवर ॥
सोहहिं तिनकी अस छवि छाजहिं । रविमंडलपर जनु विधु राजहिं
विहरत घाटनपर रघुनायक । सखा अनुज प्रियदास सहायक ॥
जहँ ठहरनकी चित बिच आवहिं । ताहि बुर्ज ऊपर चलि जावहिं ॥
चन्द्रकांतमणि सिंहासन पर । तहाँ विराजि रूप सुख सागर ॥
पावन सरयू सरित विलासा । अवलोकहिं प्रभु सहित हुलासा ॥
जनमन पावन बहत विमल जल । तरलित तुंग तरंगावलि भल ॥
राजहंस जलकुक्कुट पैरहिं । सलिल बेग इकठाम न ठहरहिं ॥

दोहा—पैरत पैरत हंस गण, जहँ तहँ डुबकी खाहिं ।
तलतैं मुक्ताफल अमल, लावहिं चंचुन माहिं ॥

यद्यपि अहहिं अगाध जल, तदपि वस्तु बड छोट।
देख परत तललों मनहुँ, धरी मुकुर की ओट॥

श्री सरयू छवि लखि रघुराई। श्री मुख ताकी करहिं बड़ाई॥
सब समेत प्रभु कृपा निधाना। उतरि करहिं सरयू विच स्नाना॥
विविध भाँतिते करहिं तिराई। जल क्रीडा छवि कही न जाई॥
यहि विधि मज्जन करि श्रीरघुवर। आवहिं चलि घाटनके ऊपर॥
तहँ करि सायं सन्ध्योपासन। राजहिं चन्द्रकान्त सिंहासन॥
तब सेवक शृंगार करावहिं। निज निज सेवा करि सुख पावहिं॥
समय जान तब सब अधिकारी। असवारीकी करहिं तयारी॥
हय गय रथ पदाति सब केहीं। श्रेणी बद्ध त्वरित करि देहीं॥

सोरठ—बाजन बिबिध प्रकार, बाजन लगहिं पयान के।
जिन्हकी सुनि धधकार लजत बलाहक बृन्द बहु॥

★ शोभायात्रा (सवारी) वर्णन ★

अंग अंग शृंगार मनोहर। सजि श्रीराम विराजहिं गजपर॥
पवनकुमार सेवकासन पर। राजहिं भक्ति बुद्धि बल आकर॥
अनुज सखा चढ़ि अपर जगन पर। इत उतसों सेवहिं सप्रेमभर॥
यहि बिधि करहिं पयान सवारी। जय उच्चरहिं वेत्र कर धारी॥
वन्दी करहिं बिरुद उच्चारण। पढहि कवित्त भाठ अरु चारण॥
पटाबाज गुण-कला-निधाना। खेलत पटे चलहिं विधि नाना॥
असवारी की सुषमा जोहत। अगणित कोटि पुरन्दर मोहत॥
शेषहु कहि न सकै छबि वाकी। तिहि वरणै ऐसी मति काकी॥

दोहा—अनुपम सज धज सों करहिं, रघुवर नगर प्रवेश।
तब सब जन मिलि उच्चरहिं, जयति जयति हृदयेश॥
तिहि अवसरमैं पौरजन, सब गृहकाज विहाय।
प्रभुके दर्शन करत हैं, राजमार्ग बिच आय॥
अटन झरोखन खिरकियन, द्वारन पै तिय बृन्द।

अपने नयन चकोर करि, चितवहिं प्रभु मुख चन्द ॥

दर्शन करि हिय अति सुख भरहीं । तन मन प्राण निछावर करहीं ॥
पुर कन्या मंगल के काजा । वर्षहिं हर्षि कुसुम अरु लाजा ॥
ललना गीत मनोहर गावहिं । जिनहि श्रवण करि प्रभु सुख पावहिं ॥
प्रभु मूरति वह परम सुहाई । सब निज निज हिय लेहिं बसाई ॥
जहँ तहँ करहिं आरती सुन्दर । भूषण धन मणि विपुल निछावर ॥
कौतुक निरखत जनहितकारी । रघुकुल पंकज-विपिन-तमारी ॥
मन्दहास सों चित्त विमोहत । अपनी कृपा दृष्टि सों जोहत ॥
करत विविध सत्कार सब नकर । पहुँचहि सुन्दर राजद्वार पर ॥

दोहा—गजतैं उतरि विराजहीं, तखतरवान मझार ।
तिहि अवसर सब प्रेमयुत, उचरहिं जय जयकार ॥

★ श्रीमातृ पितृसदन और कनकभवन गमन लीला ★

दोहा—अनुज और सेवक सखा, समयोचित लहि साथ ।
कौशल्या—अम्बा—सदन गवनहिं श्रीरघुगाथ ॥

कौशल्यादि मात तिहि अवसर । तन पुलकित मन परम प्रेम भर ॥
सजि सुन्दर आरती सुहाई । ठाढ़ी होहिं द्वार पर आई ॥
सुत मुख लखि तनु सुधि विसारती । अति प्रमुदित मन करहिं आरती
करि आरती महासुख पावहिं । सबहिं भवन भीतर ले आवहिं ॥
प्रभु कौशल्या पद शिर नावहि स्तन पय-स्रवत मात हिय लावहिं ॥
सुन्दर आशिष देहिं सुवानी । परमानन्द न जाय बखानी ॥
सम सनेह सादर पुनि रामा । सब जननिन्ह तैं करहिं प्रणामा ॥
मात उठाय लाय उर लेहीं । प्रीति सहित शुभ आशिष देहीं ॥

दोहा—रामानुज सेवक सखा, जननिन्ह करहिं प्रणाम ।
शीश पाणि सों परसि ते, आशिष देहिं ललाम ॥

पुनि श्री कौशल्या महतारी । चार सिंहासन दिव्य संवारी ॥
तिन्हपर चहुँ पुत्रन बैठावहिं । सकल पतोहुन निकट बुलावहिं ॥

कुंवर बाम भागन में सादर। तिनहिं बिठावहिं महामोद भर ॥
कुंवरि कुंवर हिय अति सुख पावहिं। गुरुजन कान मानि सकुचावहिं
सकुच सहित वह मृदु मृदु विहसन। नतलोचन करि करि अवलोकन॥
जिन्ह स्वपनेहुँ के मांझ निहारी। धन्य अहहिं ते नर अरु नारी ॥
वह छबि जननी रुचिर निहारहिं। वसन विभूषण धन मणि वारहिं
पुनि शुभ धूपरुदीप दिखावहिं। षट् रस व्यंजन विविध पवावहिं ॥

दोहा—प्रीति समेत जिमायके, पुनि सबहिन अचवाय।
बदन पोंछि वर छविसदन, बीरी देहिं बनाय ॥
सबन सहित श्रीराम उठि, मातु चरण शिरनाय।
देवि सुमित्राके सदन, गवनहिं पाय रजाय ॥
तहँ कौशल्या सदन सम, देय सबहिं आनन्द।
उठि कैकेयी सदनमें, गवनत हैं सुख कन्द ॥

तहाँ देइ सबहिन आनन्दा। पितुढिंग गवनहिं रघुकुलचन्दा ॥
पितुपद वंदि शुभाशिष पावहिं। हिय विचि महामोद सरसावहिं।
पितु आयसुतैं राजिवलोचन। निज मन्दिर दिशि गवनहिं छबिघन
अनुजदास अरु सखन कृपाला। विदा करहिं कहि बचन रसाला॥
ते प्रभु चरणाम्बुजशिर नावहिं अपने अपने सदन सिधावहिं ॥
समयोचित परिकर लहि साथा। कनक भवन प्रविशहिं रघुनाथा॥
पाय सासु आयसु सिय स्वामिनि। देवरबधुन्ह सहित अभिरामिनि
कनक भवन की ओर सिधावहिं। भगिनिन्ह निज निज भवनपठावहिं

दोहा—नवल कमल कोमल चरण, सियजू के छवि धाम ॥
वन्दि वन्दि गवनहिं सकल, अपने अपने धाम ॥
समयोचित सखिजन लिये, सियजू खंजन नैनि ॥
कनक भवन पग धरति हैं, हंस गवनि पिक बैनि ॥

छन्द—प्रकटत परम आनन्द दुहुँहिय चार अंखियाँ होत ही ॥
रुकिसकत नाहिं उमंग यद्यपि यत्नकरि कोउ रोकहीं ॥

दृग सजल पुलकित गात चाह समेत भेटहिं धायके ॥
प्यारी पियहिं पिय बल्लभा कहँ लेहिं कण्ठ लगाय के ॥
तन सुधि भुलावहिं युगल नयनन्हि सलिलधार बहावहीं ॥
मानहुँ परस्पर विरहि अग्नि बुझाय चित्त सिरावहीं ॥
अनुपम दशा यह दुहुनकी अलि जन सप्रेम निहारहीं ॥
अपने सराहहिं सुकृत ते सर्वस्व तिन्हपर वारहीं ॥

दोहा—पुनि तहँ सखिजन प्रेमयुत, ऋतु उत्सव अनुसार ।
स्वामिनि स्वामिहिं अति रुचिर, करवावहिं शृंगार ॥

सोरठा—अतिशय सुरभित धूप, दीप और नैवेद्य शुभ ।
स्रक् ताम्बूल अनूप, अर्पि सजहिं शुभ आरती ॥

सवैया—मणि कंचनथार मझार सुमंगल वस्तु अनेकन भाँतिभरैं
तिहिमें बहु वर्ति कराय के दीपित थार सो पाणिनमाहिं धरैं
प्रकटैं हिय भीतर मोद महा पुलकावलि सों सब गातभरैं
वर दम्पतिकी रजनीमुख आरति चंद्रकला यहि भाँति करैं

★ रासकुंज की लीला ★

करि शृंगार पिया अरु प्यारी । प्रविशहिं रास निकुंज मझारी ॥
अति विशल तिहिकर आँगन वर । रत्न जटित सब भाँतिन्ह सुन्दर ॥
बिछ्यो मृदुल गालीचा ताँमें । बूटा बेल बने बहु जामें ॥
जहँ तहँ लगे ललित गुल दस्ते । जिनकी गन्ध करत अलमस्ते ॥
रत्न दीपिका लसहिं सँवारी । वरण वरण जिनकी उजियारी ॥
ऊपर रत्न वितान दिव्य तर । झूमहिं ताके मुक्ता झालर ॥
सोहत तिहितर मंच विशाला । जिहि लखि मन मोहै तत्काला ॥
तिहिपर अति अपार छबिवारे । आय विराजहिं प्यारी प्यारे ॥

दोहा—सजल मेघ दामिनि वरण, छबि गुण कला निधान ।
प्रेम भरी बतियां करहिं, करहिं रूप रस पान ॥
तिहि अवसर अति प्रेम भरि, दम्पति परिकर वृन्द ।

चमर छत्र व्यजनादि लहि, सेवत हैं सानन्द ॥

तब दम्पति आगे मृग नयनी । शोभा गुण आगरि पिक बैनी ॥
बहु सखि श्रेणी रुचिर बनाये । होहिं उपस्थित साज मिलाये ॥
ते सुन्दर संगीतक रचहीं । कलरव गान करहिं अरु नचहीं ॥
बहु प्रकार के साज बजावहिं । कला दिखावहिं दुहुन रिझावहिं ॥
दम्पति होय प्रसन्न सराहहिं । देहिं निछावर जो जिहिं चाहहिं ॥
केलि करहिं पुनि ऋतु अनुसारा । करहिं ग्रीष्म में सुमन सिंगारा ॥
ऋतु पति समय किशोर किशोरी । उमग भरे दोउ खेलहिं होरी ॥
श्रावण माहिं हिंडोरे झूलहिं । शोभा निरखि रसिकजन फूलहिं ॥

दोहा—शरद निशथिन महँ करहिं, दम्पति रास बिलास ।
यहि विधि ऋतु अनुरूप दोउ, रमहिं समेत हुलास ॥

★ व्यारू कुंज की लीला ★

छविमद छाके पुनि पिय प्यारी । गवनहिं व्यारू कुँज मझारी ॥
तहँ अपने शृंगार उतारहिं । सादे नवल वसन दोउ धारहिं ॥
व्यारू थार सजाय मनोहर । आली आनि धरहिं चौकी पर ॥
चौकी के दुहुँ दिशि द्वै आसन । देहिं बिछाय ललित मृदु नूतन ॥
तिनपर बैठि प्रिया अरु प्यारे । व्यारू करहिं रूप मतवारे ॥
परुसहिं नाना व्यंजन सखिजन । सकैं कौन करि तिनको वर्णन ॥
जेवहिं युगल समेत हुलासा । देहिं परस्पर मुखमें ग्रासा ॥
जनक नगर की सखियाँ प्यारी । व्यंग युक्त मृदु गावहिं गारी ॥

दोहा—मुसकावत हैं श्रवण करि, दम्पति कौतुक धाम ।
रुचि रुचि व्यारू करत हैं, रसिकन के विश्राम ॥

पुनि अचवन करि श्रीसिय रघुवर । बैठहिं सुन्दर सिंहासन पर ॥
युगल परस्पर पान खवावहिं । स्रक पहिरावहिं इत्र लगावहिं ॥
हँसि हँसि करहिं मनोहर बतियाँ । बरबश हरण करत चित गतियाँ ॥
व्यारू करि परिकर सब आवहिं युगल प्रसादी बीरी पावहिं ॥

पावहिं इत्र प्रसादी माला। होत सबनहिय हर्ष बिशाला॥
कोउ चामर कोउ छत्र धरहिं कर। खरी होहिं कोउ व्यजन लियेकर॥
सुन्दर साज बजावहिं केऊ। नृत्य करहिं कल गावहिं केऊ॥
सब सादर सेवहिं छवि धामहिं। शील निधान सिया अरु रामहिं॥

सोरठा-यूथेश्वरी सजाय, सुन्दर व्यारू आरती।
दम्पति के ढिंग आय, मुदित उतारहिं प्रेमयुत॥

सवैया—कोउ गावत साज बजावत प्रेम लगावत है कोउ झाँझ भरी
कोउ चामर ढारति छत्र लिये कोउ प्रीति सनी करैं वायु खरी
कोउ रूप निहारति वारति सर्बस देह अपान दशाविसारी
सखि यूथकी स्वामिनि चंद्रकला करै व्यारू आरति मोदभरी

दोहा—वन्दि युगल पदकमल सब, उचरहिं जय जय कार।
गवनहिं उठि प्रियतम प्रिया, शयन निकुंज मझार॥

★ शयन कुन्ज की लीला ★

शयन निकुंज बन्यो अति सुन्दर। रत्न खचित गजदंत चित्र वर॥
रत्न झाड फानूस प्रकाशित। वरण वरण तिन्हकी द्युतिशोभित॥
फर्श मृदुल विलसत मखमलकी। शोभा हरत कामतरु दलकी॥
बूटा बेलनकी रुचिराई। ताहि सकत है को कवि गाई॥
मणिमय लघु चौकिनके ऊपर। धरी विविध उपभोग वस्तु वर॥
कहुँ मृदु सुरभित माला डाली। पान भरी कहुँ सुन्दर थाली॥
इत्रदान कहुँ परम सुहावन। पानदान कहुँ हृदय लुभावन॥
मध्य भाग मणि मंडप राजत। तिहि लखि उडुगण अवली लाजत॥

दोहा—तिहितर सेज मनोहरा, सजी परम रमणीय।
किमि वरणै तेहि निरखतहि, मोहत शारद हीय॥

शुचि मृदु रुचिर तुराई सोहत। क्षीरफेन लाजत जिहि जोहत॥
सुन्दर तकिया गाल मसूरी। मृदुल दिव्य युत रचना रूरी॥

सेज रुचिरता किमि कहि जावै। छुवत ताहि मन दृग सकुचावै॥
डर यह छुए मलिनता आवै। तातैं अकथ प्रेम तिहि गावै॥
भव्य मृदुलतर तिहि शय्यापर। आय विराजहिं श्रीसिय रघुवर॥
आवहिं तहँ समयोचित सखिजन। शिशु दासन युत मारुत नन्दन॥
सेवा करहिं सप्रेम सुहाई। कहि न जाय तिन सुख अधिकाई॥
अनिमिष दम्पति रूप निहारहिं। दृग द्वारा वह छबि उर धारहिं॥

दोहा—कनक कटोरा दुग्ध भरि, मिश्री रुचिर मिलाय।
चन्द्र कलाजू तिहि समय, दुहुँन निवेदहिं आय॥
पिय प्यारिहिं प्यारी पियहिं, पान करावहिं दुग्ध।
मनुहारैं लखि दुहुन कीं, होत सबन मन मुग्ध॥
अति मनुहार समेत पय, पान करत हैं दोउ।
दुग्ध प्रसाद यथेच्छ पुनि, पावत हैं सब कोउ॥
अचवन करि प्रियतम प्रिया, धरहिं भुजा भुजमूल।
मुदित परस्पर देत हैं; परम रुचिर ताम्बूल॥

भुजा परस्पर अंसन धारे। निरखहिं सुछवि निमेष विसारे॥
पियत परस्पर रूप सुधारस। मत्त होहिं रहहिं न अपने वस॥
होहिं दुहुँन के विकसित लोचन। कंपित पुलकित शोभित युगतन॥
अटकि अटकि उचरत हैं बचना। परम अटपटी तिनकी रचना॥
मृदु मुसकान समेत जम्हावहिं। निद्रामिषकरि दशा दुरावहिं॥
चन्द्रकला तब कहहिं सबन सन। निद्रा दुहुन चहत हैं आवन॥
असकहि शुभ आरतीं सजावहिं। सेज समीप आप चलि आवहिं॥
शयन आरती मुदित उतारहिं। प्रेम सहित वह सुछविनिहारहि॥

सवैया :—

आलस युक्त हैं गात दुहुँन के नैनन में जनु नींद छई हैं।
कम्पित गात जम्हात परस्पर अंसन पै भुज डारिदई है।
सो छवि जोहि बिमोहि सखीजनईश्वरी चित्र लिखीसी भई है॥
आरति हाथ की हाथ रही लखि प्रेम गिरा तिहि रंग रई है॥

दोहा—पुनि धीरज धरि कछु सकुचि, मधुर मधुर मुसकाय।
शयन आरती करत हैं, चन्द्रकला सुखपाय ॥

पुनि सप्रेम दम्पति के चरणन। करहिं प्रणाम लाय हिय नयनन॥
दोउकर जोरि कहत दम्पति सन। हे छबिघन रसिकन के जीवन॥
निशा बहुत बीती है प्यारे। शयन करिय अखियन के तारे ॥
यह सुनि उठहिं त्वरित सब परिकर। वन्दहिं दंपति अरुण चरणवर॥
चन्द्रकला संगलहि सब सखिवर। गवनहिं शयन भवनतैं बाहर ॥
शिशु सेवकन सहित कपिराई। बन्दि युगलपद आयसु पाई ॥
शयन भवनतैं बाहर आवहिं। जरतारी परदे छिटकावहिं ॥
रसिक चातकन के दामिनिघन। शयन करहिं श्रीसिय रघुनन्दन॥

दोहा—शिशु सेवकि सेवकन कहँ, निज निज स्थान मझार।
पौढ़ावहिं यूथेश्वरी, अरु श्री पवन कुमार ॥

चन्द्रकला सब सखिन समेता। पौढ़हिं निज निज रुचिर निकेता॥
शिशु दासन युत मारुत सुतवर। पौढ़हिं निज निज स्थानन भीतर॥
युगल स्वभाव स्वरूप मनोहर। मुदित प्रशंसत निज उर अन्तर ॥
रसना अमृत सकल सुख धामा। सुमिरत पावन दम्पति नामा ॥
युगल ललित पद ध्यावत ध्यावत। निद्रा सब परिकर कहँ आवत॥
नींदहु में प्रभु पद अनुरागहिं। प्रभुहिं भजत पिछली निशि जागहिं॥
निज निज सेवा करि सुख पावहिं। समय भये दम्पतिहिं जगावहिं॥
दर्शन करि पावहिं आनन्दहिं। सेवहिं श्रीसिय रघुकुल चन्दहिं॥

दोहा—करहिं नित्य लीला ललित, जिहि विधि कीन्ह बखान।
सब परिकरहिं करावहीं, युगल कृपामृत पान ॥

★ ग्रंथका उपसंहार और समर्पण ★

छन्द—सम्वत उन्नीसौ इक्यासी, नभ सित पाचैं मंगलवार।
सीताराम नित्य लीला को, भयो भूमितल पै अवतार॥

अवध जानकी घाट निवासी रामवल्लभाशरण उदार ।
साधु शिरोमणि मेरे सद्गुरु जगत् जलधि निस्तारणहार ॥
अनुपम युगल नित्यलीला यह तिन्ह श्रीमुखसो वर्णन कीन्ह ।
ताहि सुनी सुखमानि प्रेमनिधि अरु अपने हियबिच धरिलीन्ह ॥
श्रीमुख वर्णित पूर्णभाव मम मलिन चपल चित पायो नाहिं ।
दरसत है रबि विम्ब स्पष्ट नहिं समल सफेन तरल जल माहिं ॥
परयो नेक आभास ताहि लहि प्रतिभा हिय हुलसाई है ।
तिहि वल ब्रजभाषा पद्यन में दम्पति लीला गाई है ॥
नहिं कवित्व है लेशहु मोमें कविजन सज्जन यह जियजानि ।
कीजे क्षमादोष गुण गहिनी दोषविसारणि तुम्हरी बानि ॥

षटपद-सीताराम स्वरूप भक्तजन हैं जग भीतर ।
रामचरित्र पवित्र मानसर राजहंस वर ॥
पर उपकार मझार रहत हैं सन्तत तत्पर ।
तिनके कोमल पद द्वंद बन्दतहौं सादर ॥
तिनही के कृपा कटाक्षतैं सकल भांति है मोरहित ।
यह तिनहिं समर्पत प्रेम रचि युगल नित्यलीला ललित ॥

इति श्रीअयोध्या श्रीजानकीघाट निवासी दिव्य श्रीसाकेत धामवासी सन्तकुल कमल दिवाकर जगदोद्धारक जगद्गुरु वर्य अनन्तश्री पं० श्रीरामवल्लभाशरणजी महाराज के परम कृपापात्र शिष्य जयपुर निवासी परम मनस्वी कविवर बहुरा श्रीगंगासहायजी "श्रीप्रेमनिधिजी" रचित श्रीयुगल नित्यलीला समाप्त ।

4276

समाप्तोयंग्रन्थः

श्रीगुरु अष्टक

षट् पद—दिव्य धाम श्रीअवध जानकीघाट निवासी
रघुकुल कमल दिनेश जनक नृप सुता उपासी
जिनहिय मन्दिर रहति सर्वदा प्रभा देवी
साधु समूहा धार साधुवर पदरज सेवी
मंगलमय जिनकर नाम शुभ जन रसना पावन करण ।
श्रीरामवल्लभाशरण गुरु जयति जयति अशरण शरण ॥१॥

गौरवर्णतनु भव्य नव्य सरसिज दल लोचन
चितवनि करुणा शान्ति पूर्ण सन्तत प्रसन्न मन
लोचन होत कृतार्थ लखत मुख शरद इन्दु वर
होत सुशीतल परम स्वच्छ जन हृदय रूप सर
खुलिजात हृदय दृग प्रेमयुत अरुण मृदुल ध्यावत चरण ।
श्रीरामवल्लभाशरण गुरु जयति जयति अशरण शरण ॥२॥

भाल तिलक सित मनहुँ बाल शशि लेखा सोहन
अरुण श्रीशुभ मनहुँ विराजत तीसर लोचन
जटा पटल शिरश्वेत केश लट गंगा राजति
गौर अङ्ग तनु रोम राजि जनु भूति विराजति
शंकर स्वरूप श्रीगुरु अहहिं आशुतोष अवढर ढरण ।
श्रीरामवल्लभाशरण गुरु जयति जयति अशरण शरण ॥३॥

अति पंडित षटचारि और अष्टादश मंडित
सहृदय अति मतिमान ज्ञान विज्ञान अखंडित
करतल गत आमलक सरिस सिद्धान्त सबनके
परम अनुभवी मर्मी परमारथ पन्थनके
अति सुगम रीति तें करत हैं जन कुतर्क संशय हरण ।
श्रीरामवल्लभाशरण गुरु जयति जयति अशरण शरण ॥४॥

सन्त समूह मझार राजि सिंहासन ऊपर
नित्य कहहिं सद्ग्रन्थ बादरायण ऋषि अनुहर

परत श्रवण विच शब्द होत आनन्द मगन मन
यह वे [illegible] किये कबहुँ जिन रस आस्वादन
इक इक अक्षर [illegible]जन के अहहिं प्रेम भक्ति हियविच भरण ।
श्रीरामवल्लभाशरण गुरु जयति जयति अशरण शरण ॥५॥

व्यसन सुदृढ़ मन वचन कर्म साधुन कर सेवन
आग्रह यह नित करहिं रामसिय सम्मुख जीवन
रामनाम सों राग द्वेष द्वेषहि सों मानहिं
यह स्वभाव जन अवगुण कबहू चित्त न आनहिं
अल्पहु गुण मानहिं प्रेम बहु विरुद अधम जन उद्धरण ।
श्रीरामवल्लभाशरण गुरु जयति जयति अशरण शरण ॥६॥

जगतभीत बहु जीव शरण नित तिनकी आवहिं
करुणाकरि करुणा निधान तिनकहँ अपनावहिं
उपदेशामृत परम प्रीतियुत पान करावहिं
दुहुँ लोकन कल्याण होय अस यत्न बतावहिं
आचरत जाहि छुटिजात है जगत माहिं जन्मन मरण ।
श्रीरामवल्लभाशरण गुरु जयति जयति अशरण शरण ॥७॥

शिष्य समूहन आप सदा सद्ग्रन्थ पढ़ावहिं
सब केरे सिद्धान्त तत्व तिन हृदय दृढ़ावहिं
मनते रहहिं सदैव भावना भीतर पागे
तनतें जग उपकार और हरि अर्चन लागे
आधार प्रेमसे दीनके अति समर्थ तारण तरण ।
श्रीरामवल्लभाशरण गुरु जयति जयति अशरण शरण ॥८॥

श्रीगुरु अष्टक प्रेमयुत जे पढ़ि हैं करि नेम ।
पैहैं ते सुख सम्पदा सियाराम पद प्रेम ॥

श्रीमानस मुद्रणालय

श्रीजानकी घाट, श्रीअयोध्याजी में मुद्रित